P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सुरेश चन्द्र के साहित्य में दलित विमर्श

हंसराज चौहान
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
होद (सीकर) राजस्थान, भारत

सारांश

सुरेश चन्द्र की पहचान हिन्दी भाषा और साहित्य में तेज तर्रार युवा रचनाकार, आलोचक तथा दलित चिन्तक के रूप में स्थापित हो चुकी है। उनके रचनाकर्म का फलक भी अत्यंत विस्तृत है। चाहे उनका सृजनात्मक साहित्य हो या फिर आलोचना अथवा शोध, अलग विषय और भिन्न – भिन्न क्षेत्र उनकी व्यापक समझ और अध्ययन की गहराई के द्योतक है।

मुख्य शब्द : सामाजिक समरसता, दलित विमर्श, सौन्दर्य बोध, सामाजिक सरोकार।

प्रस्तावना

भारतीय समाज का एक बड़ा हिस्सा जो सदियों से दूसरों की गुलामी करता आया उसे बाबा साहब अम्बेड़कर के प्रयत्नों से स्वतंत्र भारत में कई मौलिक अधिकार प्राप्त हुए। जिसमें उसके रहन–सहन, सोच विचार और चिंतन प्रणाली में परिवर्तन आया। जिस समाज के लिए किसी जमाने में विद्या अध्ययन करना गुनाह था। धन संचय जिसके लिए प्रतिबंधित था। आजाद भारत में उसके लिए नये द्वार खुले। शिक्षित बनने से रोजगार के अवसर प्राप्त हुए और रोजगार से धन की प्राप्ति हुई व रोटी का साधन बन गया तब दिमाग चिंतन और विचार करने लगा तथा दिमाग की भूख प्रारम्भ हुई। दलित वर्ग के बुद्धि जीवियों ने अपनी गुलामी और दासता के कारणों को ढूंढना प्रारम्भ किया। इसके दोषी कारणों को मानव समाज के आगे प्रस्तुत किया। यही दलित चेतना से भरपूर दलित साहित्य बना।

दलित विमर्श एक जाति विशेषण का विमर्श नहीं है, अपितु यह वंचित, शोषित और उपेक्षित वर्ग समुदाय व्यक्ति का विमर्श है।दलित साहित्य के प्रारम्भिक दौर में अनेक विधाएं लिखी गई। कालान्तर में दलित रचनाकारों ने कहानी विधा को अपनाया। धीरे–धीरे दलित लेखकों ने अपनी आलोचना और विमर्श प्रारम्भ किया। इस दलित विमर्श की लेखन परम्परा को हिन्दी सम्पादकों ने प्रकाशन में विशेष रूचि नहीं दिखायी। फिर भी दलित लेखकों ने हौसला नहीं खोया और अपने रचनाकर्म को एक आन्दोलन की तरह जारी रखा।

प्रो. सुरेश चन्द्र जय प्रकाश कर्दम, ओमप्रकाश वाल्मिकी, माता प्रसाद, सूरजपाल चौहान, प्रो. तुलसीराम, श्यौराज सिंह बैचेन, रतन कुमार सांभरिया की दलित विमर्श की परम्परा से विकसित होकर हिन्दी दलित लेखन में यथार्थवादी दृष्टि का आरम्भ हुआ। पहली बार दलित विमर्श लेखन को नये सौंदर्य बोध का उजास दिया और दलित आत्मालोचना का नया सौंदर्य शास्त्र रचा। अपने पहले शोधालोचना–'समकालीन मूल्यबोध' और 'संशय की एक रात से लेकर' 'दलित विमर्श से आलोचना तक' संकलनों में दलित विमर्श की नवीन उद्भावनाओं का सृजन करते हैं। उनके कलाकर यह मार्क छवि 'भगवान का अनुभव' (काव्य संग्रह) 'दलित के सूर्य नाटक' और 'शब्द संग्राम के सेनापति माता प्रसाद' जैसे अभी हाल में ही प्रकाशित अन्य रचनाओं में यह चेतना और मुखर होकर सामने आती है।

समकालीन दलित लेखकों में प्रो. सुरेश चन्द्र का नाम किसी परिचय की दरकार नहीं रखता। व्यापक–सामाजिक और समकालीन सरोकारों से जुड़ा लेखन दलित विमर्श को कई रूपों में प्रभावित कर नई शक्ति प्रदान करता है। समकालीन दलित विमर्श को विकास की ओर ले जाने में सुरेश चन्द्र की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

प्रो. सुरेश चन्द्र की पहचान हिन्दी भाषा और साहित्य के तेज तर्रार रचनाकार, आलोचक तथा दलित चिंतक के रूप में स्थापित हो चुकी है। अल्प समय में ही काव्य संग्रह– 'भगवान का अनुभव', कर्मण्येवाधिकारस्ते', नाटक महाभिनिष्क्रमण', 'दलितों के सूर्य' उनके सृजनात्मक साहित्य के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। आलोचना से सम्बंधित 'नरेश मेहता' की काव्य साधना मणिपुर में हिन्दी की

विकास यात्रा आदि श्रेष्ठ रचना उनकी निरन्तर रचना धर्मिता का साक्षात् प्रमाण है। प्रो. सुरेश चन्द्र का रचना कर्म का फलक भी अत्यंत व्यापक है। चाहे उनका सृजनात्मक साहित्य हो या फिर आलोचना अथवा अलग विषय और भिन्न क्षेत्र उनकी व्यापक समझ और अध्ययन की गहराई के द्योतक हैं। प्रो. सुरेश चन्द्र ने हिन्दी में चल रहे दलित विमर्श में हस्तक्षेप कर उसे भारतीय साहित्य परम्परा से जोड़ते हुए एक वृहत्तर और विश्वसनीय आयाम प्रदान किया है जो प्रचलित आन्तरिक दलित विमर्श से हटकर स्वयं में अलग अपनी पहचान बनाता है।

प्रो. सुरेश चन्द्र ने अपने कविता संग्रह में कवि कर्म को निभाया है इस कर्म हेतु अपने काव्य कला की विधाओं को प्रयुक्त किया है। जिनमें प्रमुख हैं– गीत, नवगीत, दोहा, मुक्त छंद, गजल एवं जापान की हाइकू। आपकी प्रमुख संवेदना जीवन की गहराइयों में उतर कर उस सूक्ष्म तल तक पहुंचती है जहां जीवन का बोधितत्व आध्यात्मिक प्रकाश की तरह विद्यमान रहता है–

''उड़ी पंतग
गैर हाथों में डोंर
वह अपंग
सैनिक घने
नपुंसक व्यवस्था
इरादे हमें
कर्म तो करो मिलेगा सबकुछ
धीरज धरो।''

प्रो. सुरेश चन्द्र की काव्य संवेदना काफी व्यापक हैं, वे समकालीन मुहावरों से भी भलीभांति परिचित हैं। उनकी कविता मृत होती मानवीय संवेदना को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न करती हैं। लेखक अपनी रचनाओं में दलित विमर्श के साथ–साथ नारी सशक्तिकरण की बात भी करता है।

वे 'फूलन देवी' नामक कविता में फूलन देवी को नारी सशक्तिकरण का एक अध्याय मानते हुए उसे दलित, वंचित, उपेक्षित, समाज की शहीद नायिका कह कर सम्बोधित करते हैं–

''हे फूलन!
तू मरी नहीं
करोड़ों करोड़ों की इज्जत के लिए
अमर बनी
शहीदाने ढंग से
तेरी अमरता
मृत्यु लोक के लिए
एक विरासत है
संघर्ष की,
उपलब्धि की।''

प्रो. सुरेश चन्द्र जीवन के सकारात्मक पक्षों की ओर हमें उन्मुख करते हुए मनुष्य और मनुष्यता को जीवत रखने की सांस्कृतिक चुनौती को स्वीकार करते है।प्रो. सुरेश चन्द्र का लेखन निराशा उपेक्षित, वंचित, शोषित व हारे हुए व्यक्ति को बराबर जीवन की ओर खींचने का सार्थक प्रयत्न करता है समकालीन युग बोध, मूल निवासी, महा मानववादी, राष्ट्रवादी प्रो. सुरेश चन्द्र को हिन्दी साहित्य सभा आगरा द्वारा श्री रघुनाथन सिंह चौहान स्मृति सम्मान, भारतीय वाड्.मय पीठ कोलकाता द्वारा– 'भारत गौरव सारस्वत', सूर्या संस्थान नोएड़ा द्वारा 'सूर्या अंतर्भारती भाषा सम्मान 2017' तथा 16वें अंतराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन केरल द्वारा 'डॉ. रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान' से विभूषित किया गया है। इनके अलावा अन्य पुरूस्कार भी उनको मिल चुके हैं।

प्रो. सुरेश चन्द्र ने अपनी रचनाओं में स्थापत्य की संरचना में विस्फोट किया है, साथ ही चरित्र निर्माण की नई अवधारणा का भी विकास किया है। वे अन्य दलित लेखकों, चिंतकों से कुछ अलग दिखाई पड़ते हैं, वे दलित, शोषित की समस्याओं के साथ–साथ अपनी रचना संसार में राष्ट्रवाद, पर्यावरण चेतना व नारी विमर्श की भी बात करते हैं। श्रेष्ठ मूल्यों के आलोक में एकजुट रह कर आगे बढ़ाना उनकी रचना धर्मिता का आधार है। वे अपनी रचनाओं में सहज दलितों की भाषा यानि की दलित भाषा का ही प्रयोग करते हैं।

समकालीन दलित विमर्श दृष्टि युगीन परिदृष्य, आज की शक्ति, मूलनिवासी की अहमीयत, नवीन मानववादी, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय चिंतन, सामाजिक यथार्थ आदि समकालीन दलित विमर्श के व्यापक आयामों से प्रो. सुरेश चन्द्र की रचनाएं आज के दौर में प्रासंगिक हैं। दलित विमर्श की विकास एवं उत्कर्ष में उनकी महती भूमिका है। वे ओम प्रकाश वाल्मिकी, श्योराज सिंह बैचेन, सूरजपाल चौहान, रतन कुमार सांभरिया, प्रो. तुलसीराम, माताप्रसाद की दलित विमर्श की परम्पराओं के साथ–साथ चलते हैं।

सुरेश चन्द्र की कविताओं में प्रगतिशीलता के विविध आयाम घनीभूत हैं। उनका काव्य बोध जड़ताओं का ध्वंस करने के लिए पाठकों में नई आशा का संचार कर रहा है। उनकी कविता मानवता की विस्तारक है। जीवन पथ पर निरन्तर संचरण कर उन्होंने मानवता की मुक्ति की कामना की लेकर जो शब्द चिन्तन किया है,वह शलाध्य हैं। सुरेश चन्द्र के काव्य में कथ्य की तीव्र व्यंजना विद्यमान है। हर कोई भारत को महान बनाने के लिए चिन्तातुर है,लेकिन यथार्थ के धरातल पर भारत महान नहीं है,बल्कि वह स्वप्निल दृश्य की तरह है।
वें लिखते हैं–

''सोचते–सोचते सो गया।
फिर सपनों में खो गया।
जगने पर देखा मैंने,
भारत महान हो गया।
देख कर मैं रो गया।
हाय! यह क्या हो गया?
मैंरे सपनों का भारत,
भारत सपनों का गया।''

वर्तमान में कहने भर को लोकतंत्र है। लोक की निरन्तर उपेक्षा हो रही है,क्योंकि लोकतंत्र के कर्णधार निरंकुशता से प्रेरित हो कर कार्य कर रहें हैं। जनता के दुख दर्द से नेताओं का क्या लेना देना? आज देश का लोकतंत्र व्यथित है, विक्षुब्ध है तथा लज्जा से व्याकुल है। नेताओं की सुविधा भोगी संस्कृति परकवि का प्रहार उनकी कविता में देखा जा सकता है:–

''लोकतंत्र है, नेताजी की बहार है।

दुःखी जनता , क्योंकि उसका प्रतिनिधि फरार है।
लोकतंत्र है, नेताजी की बहार है।''

अध्ययन का उद्देश्य

समकालीन साहित्य जगत में दलित विमर्श दृष्टि युगीन परिदृश्य, आज की शक्ति, मूलनिवासी की अहमीयत, नवीन मानववादी, राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय चिंतन, सामाजिक यथार्थ आदि समकालीन दलित विमर्षों के व्यापक आयामों को उजागर करना इस शोध पत्र का उद्देष्य है। प्रो. सुरेश चन्द्र की रचनाएं आज के दौर में प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सुरेश चन्द्र के साहित्य में भाव तत्व और विचार तत्व का सामंजस्य है। दलितों साथ होने वाले सामाजिक अन्याय का प्रतिरोध उनके साहित्य का प्राण तत्व है। सामाजिक समरसता से ही भारत महान बनेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

डॉ.सुरेश चन्द्रः– दलित चिन्तन की दिशाएं।
डॉ.सुरेश चन्द्रः–दलितों के सूर्य।
डॉ.सुरेश चन्द्रः–भगवान का अनुभव।
डॉ.सुरेश चन्द्रः–कर्मण्येवाधिकारस्तें।
डॉ.सुरेश चन्द्रः–साहित्य और मानवीय सरोकार।
डॉ.सुरेश चन्द्रः–दलित विमर्श से आलोचना तक।